UP Board Notes for Class 12 Sahityik Hindi पद्य Chapter 2 उद्धव-प्रसंग / गंगावतरण

जीवन परिचय एवं साहित्यिक उपलब्धियाँ

आधुनिक काल के ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में 1866 ई. (विक्रम सम्वत् 1923) में हुआ था। 'रत्नाकर' जी के पिता श्री पुरुषोत्तमदास भारतेन्दु जी के समकालीन, फारसी भाषा के विद्वान् और हिन्दी काव्य के मर्मज्ञ थे।

स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद 1891 ई. में वाराणसी के सीन्स कॉलेज से बी. ए. की डिग्री प्राप्त करके वर्ष 1902 में अयोध्या-नरेश के निजी सचिव नियुक्त हुए और वर्ष 1928 तक इसी पद पर रहे। राजदरबार से सम्बद्ध होने के कारण इनका रहन-सहन सामन्ती था, लेकिन इनमें प्राचीन धर्म, संस्कृति और साहित्य के प्रति गहरी आस्था थी। इन्हें प्राचीन भाषाओं का अच्छा ज्ञान था तथा ज्ञान-विज्ञान की अनेक शाखाओं में गति भी थी। वर्ष 1932 में इनकी मृत्यु हरिद्वार में हुई।

साहित्यिक गतिविधियाँ

इन्होंने 'साहित्य-सुधानिधि' और 'सरस्वती' के सम्पादन, 'रसिक मण्डल' के संचालन तथा 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना एवं उसके विकास में योगदान दिया।

कृतियाँ

गद्य एवं परा दोनों विधाओं में साहित्य सृजन करने वाले रत्नाकर जी मूलतः कवि थे। इनकी प्रमुख कृतियों में हिण्डोला, समालोचनादर्श, हरिश्चन्द्र, गंगालहरी, श्रृंगारलहरी, विष्णुलहरी, रत्नाष्टक, गंगावतरण तथा उद्धव शतक उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने सुधाकर, कविकुलकण्ठाभरण, दीप-प्रकाश, सुन्दर श्रृंगार, हमीर हठ, प्रकीर्ण गधावली, रस-विनोद, हिम-तरंगिणी, बिहारी-रत्नाकर आदि ग्रन्थों का सम्पादन भी किया।

काव्यगत विशेषताएँ

भाव पक्ष

जगन्नाथ रत्नाकर भावों के कुशल चितेरे होने के कारण उन्होंने मानव के हृदय के सभी कोनों को झाँककर अपने काव्य में ऐसे चित्र प्रस्तुत किए हैं कि पाठक उन्हें पढ़ते ही भाव-विभोर हो जाते हैं।

1. काव्य का विशुद्ध शुद्ध रूप रत्नाकर जी के काव्य का पण्य विषय भक्ति काल के अनुरूप, भक्ति, श्रृंगार, भ्रमर गीत आदि से सम्बन्धित है और उनके वर्णन करने की शैली रीतिकाल के समरूप ही है। अतः उनके विषय में यह सत्य ही कहा गया है कि रत्नाकर जी ने भक्तिकाल की आत्मा को रीतिकाल के ढाँचे में अवतरित कर दिया है। उनके काव्य का विषय शुद्ध से पौराणिक है। उन्होंने उद्धवशतक, गंगावतरण, हरिश्चन्द्र आदि रचनाओं में पौराणिक कथाओं को ही अपनाया है। रत्नाकर जी के काव्य में धार्मिक भावना के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना भी मिलती है।

2. भाव चित्रण रत्नाकर जी भाव-लौक के कुशल चितेरे थे। उन्होंने अपने काव्य में क्रोध, प्रसन्नता, उत्साह, शोक, प्रेम, घृणा आदि मानवीय व्यापारों के सुन्दर चित्र उपस्थित किए हैं;
   जैसे टूक-टूट हुवै है मन मुकुर हमारे हाय,
   चूंकि हूँ कठोर बैन-पाहन चलावौना।
   एक मनमोहन तौ बसि के उजारयौ मोहिं,
   हिय में अनेक मन मोहन बसावी ना।।
3. प्रकृति चित्रण रत्नाकार जी ने अपने काव्य में प्रकृति का अत्यन्त ही मनोहारी वर्णन किया है। उनके प्रकृति-चित्रण पर रीतिकालीन प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
4. रस इनके काव्य में लगभग सभी रसों को समुचित स्थान प्राप्त है, किन्तु संयोग श्रृंगार की अपेक्षा विप्रलम्भ श्रृंगार में अधिक सजीवता व मार्मिकता है। तथा वीर, रौद्र व भयानक रसों का भी सुन्दर वर्णन है।

कला पक्ष

1. भाषा रत्नाकर जी भाषा के मर्मज्ञ तथा शब्दों के आचार्य थे। सामान्यतया इन्होंने काव्य में प्रौद साहित्यिक ब्रजभाषा को ही अपनाया, लेकिन उनकी भाषा में जहाँ तहाँ बनारसी बोली का भी समावेश देखने को मिलता है। भाषा व्याकरणसम्मत, मधुर एवं प्रवाहयुक्त है। वाक्य-विन्यास सुगठित एवं प्रवाहपूर्ण है। कहावतों एवं मुहावरों का भी कुशल प्रयोग किया है।
2. छन्द योजना इन्होंने मुख्यतः रोला, छप्पय, दोहा, कवित्त एवं संवैया को अपनाया। उद्धव शतक और श्रृंगारलहरी में रत्नाकर जी ने अपना सर्वाधिक प्रिय छन्द कविता का प्रयोग किया।
3. अलंकार योजना अलंकारों का समावेश अत्यन्त स्वाभाविक तरीके से हुआ है, इन्होंने मुख्यतः रूपक, उपेक्षा, उपमा, असंगति, स्मरण, प्रतीप, अनुप्रास, श्लेध, यमक आदि अलंकारों का प्रयोग किया। इनकी रचनाओं में प्राचीन और मध्ययुगीन समस्त भारतीय साहित्य का सौष्ठव बड़े स्वस्थ, समुज्ज्वल एवं मनोरम रूप में उपलब्ध होता है।
4. शैली रत्नाकर जी के काव्य में चित्रात्मक, आलंकारिक व चामत्कारिक शैली का प्रयोग किया गया हैं।

हिन्दी साहित्य में स्थान

रत्नाकर जी हिन्दी के उन जगमगाते रत्नों में से एक हैं, जिनकी आभा चिरकाल तक बनी रहेगी। अपने व्यक्तित्व तथा अपनी मान्यताओं को इन्होंने काव्य में सफल वाणी प्रदान की है। उसकी छाप इनकी साहित्यिक रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

https://www.evidyarthi.in/